MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

Vidyawarta®

Issue-20, Vol-16, Oct. to Dec.2017
International Multilingual Research Journal

Editor
Dr.Bapu G.Gholap

Scanned with OKEN Scanner

27) जंगलसंरक्षण आणि शेतकरी
डॉ. कैलाश आर. भांडारकर, गडचिरोली || 109

28) वस्तू आणि सेवा कर कायदा — लेखे, करनिर्धारण आणि लेखा परिक्षण
प्रा. डॉ. एम. बी.कदम,उमरखेड जि.यवतमाळ || 114

29) उच्च माध्यमिक स्तरावरील विद्यार्थ्यांची भावनिक बुद्धीमत्ता आणि अभिरुची यांचा अभ्यास
डॉ.विजयकुमार भैय्याजी खंडाते, ब्रम्हपुरी || 118

30) बँकांची बुडीत कर्जे : एक चिंतनीय बाब
प्रा. एम. के. नन्नावरे , प्रा. डॉ. संतोष एन. ताडे, अकोट || 120

31) मराठी साहित्यातील स्त्रीमुक्तीविषयक दलित लेखिकांचे योगदान
प्रा.डॉ. रेखा नारायण वाघ, वाळूज, ता.गंगापूर, जि. औरंगाबाद || 122

32) गुजराती भाषा साहित्य के लोकगीतों में निरुपित गुजराती समाज और संस्कृति :
भावनाबेन धीरजलाल छांटबार, सावली, जिला, वडोदरा, गुजरात || 126

33) विश्व भाषा के रूप में हिंदी का वर्तमान स्वरूप
डॉ.सातापा लहू चव्हाण,अहमदनगर || 132

34) निजी शिक्षा महाविद्यालयों में कार्यरत अध्यापक शिक्षकों में कार्य संतुष्टि का अध्ययन
डॉ. सुजाता अतुल शर्मा, रायपुर, डॉ.श्रीमती स्वाती जाजू, बिलासपुर || 136

35) अध्यापक शिक्षा में सम्प्रेषण कौशल के माध्यम से सुधार
शहादत हुसैन, डॉ. अनुप कुमार, चितौड़गढ़ || 138

36) सूरज पाना है : एक समीक्षात्मक अध्ययन
डॉ. संगीता जगताप, चिखलदरा, जिला अमरावती,महाराष्ट्र ||142

37) 'कठपुतली' नाटक — इक अध्ययन
डॉ. सुरेश शर्मा, अखनूर, जम्मू—कश्मीर || 145

38) आधुनिक संदर्भ : कबीर की प्रासंगिकता
कदम शरद शेषराव, नांदेड || 148

39) आचार्य क्षेमेन्द्र का व्यक्तित्व एवं स्थिति काल
डॉ. रामप्रकाश शर्मा, बिन्दु देवी, चुरू (राज.) || 152

http://www.printingarea.blogspot.com
www.vidyawarta.com/03

Scanned with OKEN Scanner

निष्कर्ष :

लेकिन आज के इस सूचना प्रौद्योगिकी के युग में अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता लाने के लिए तथा समय की माँग के आधार पर पाठ्यक्रम में आये बदलाव के कारण शिक्षक को अपने ज्ञान में बदलाव लाने के लिए संप्रेषण साधनों का कुशलतापूर्वक उपयोग करना चाहिए जिससे उसके संप्रेषण कौशल तथा उसकी शिक्षण विधि अधिक सरल रोचक हो सके और वह अपने पाठ्यक्रम को अपने विद्यार्थियों को बड़ी आसान ढंग से समझा सके।

संस्कृत में एक प्रसिद्ध कहावत है। 'आप दीपो भव' अर्थात् अपना दीपक खुद बनो। कहने का अर्थ यह है कि अपने काम के लिए दूसरों पर निर्भर मत रहो। हममें से बहुत सारे अध्यापक ऐसे है जिनमें आत्म विश्वास और आत्मबल की अत्यधिक कमी होती है वह सदैव दूसरों पर आस लगाए बैठे रहते है। उनकी तुलना उस परजीवी कीटाणु से की जाती है जो दूसरों की अस्थिमज्जा, रक्त पर पलकर अपना पोषण करते है। ऐसे व्यक्तियों का अपना कोई अस्तित्व नहीं होता। समाज में भी उसकी कोई साख नही होती है। अतः अध्यापक शिक्षा के लिए आवश्यक है कि यह अपना दीपक स्वयं बने।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची—

१. डॉ एस. पी. कुलश्रेष्ठ, शैक्षिक तकनीक के मूल आधार ([illegible])

२. डॉ. ए. बी. भटनागर, डॉ (श्रीमति) मीनाक्षी भटनागर, डॉ. अनुराग भटनागर, शैक्षिक तकनीक एवं प्रबन्धना ([illegible])

३. डॉ. (श्रीमति) सन्तोष मित्तल, शैक्षिक तकनीक एवं कक्षा–कक्ष प्रबन्ध ([illegible])

४. उर्मिला भार्गव, ऊषा भार्गव, शिक्षण सिद्धान्त एवं शिक्षण कला ([illegible])

५. डॉ. एस. एस. [illegible] अध्ययन के मूल तत्व ([illegible])

६. योजना, अगस्त [illegible] योजना भवन, संसदमार्ग, नई दिल्ली ([illegible])

७. योजना, सितम्बर, [illegible] योजना भवन, संसदमार्ग, नई दिल्ली ([illegible])

८. राधाकृष्णन, एस एन आइडियलिस्ट व्यू ऑफ लाइफ, रिपोर्टऑफ एजूकेशन कमीशन ([illegible])

९. एजूकेशन रिकन्सट्रक्शन इन इन्डिया, समाचार बुलेटिन, अप्रेल [illegible]

36

सूरज पाना है : एक समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ. संगीता जगताप
कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय,
[illegible], जिला अमरावती, महाराष्ट्र

****

सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली से प्रकाशित बाल कविता के अन्तिम पड़ाव किशोर कविता पर आधारित डॉ. परशुराम शुक्ल लिखित कविता संग्रह – 'सूरज पाना है' कवि का एक मौलिक, मनोवैज्ञानिक एवं सामयिक प्रयास है। इस कविता संग्रह में कुल ४२ कविताएँ संग्रहीत है। प्रत्येक कविता में कवि के नए तेवर, कलेवर एवं बुनावट में सर्वथा मौलिक एवं अनूठी अनुभूतियाँ है। बाल मनोरंजन के साथ अप्रत्यक्ष में एक निश्चित उद्देश्य को लेकर गढ़ा गया ये कविताएँ मनोरंजन के माध्यम से किशोरों के लिए संदेश भी है।

भारतीय साहित्य परम्परा में किसी भी अनुष्ठान का प्रथम चरण ईश वन्दना से आरम्भ होता है। काव्य सर्जन भी एक पवित्र अनुष्ठान है। अतः संग्रह की पहली कविता में किशोर ईश्वर से वरदान माँग रहा है। इसमें वरदान माँगने का संकोच याचना भर नहीं है। इसमें कवि द्वारा स्वयं का [illegible] करने हेतु आत्मविश्वास एवं दृढ़ इच्छाशक्ति [illegible] है

"हे प्रभु [illegible], नहीं तो ऐसा कर दो।"

किशोर केवल अपना [illegible] सुरक्षित रखना चाहता है। सपने होंगे [illegible], सपने बुनेंगे तो जीवन जिएंगे। सपने साकार करने के लिए भय त्याग प्रमुख है। अतः असफलता के बाद सफलता की कामना ही इस कविता का मुख्य स्वर है–

"असफलता के बाद सफलता, की जागे आशाएँ। अपना महाशक्ति से दाता तुम कुछ ऐसा

Scanned with OKEN Scanner

कर दो। कर दो।''

किशोरों में देशप्रेम, देशरक्षा और देशभक्ति का जज्बा भी बहुत अधिक होता है। नये—नये सपने, नये अनुभवों को लेकर किशोर कुछ भी कर गुजरने के लिए तत्पर होते हैं। मन में देशरक्षा का भाव उनके व्यक्तित्व का परिमार्जन करता है और परिशोधन भी—

''जब तक मंजिल प्राप्त न आये,
आगे बढ़ता जाता।
साथ सबके देशप्रेम के,
सबको गीत सुनाता।''

इतना ही नहीं, देशप्रेम का भाव उनके जीवन का मूल उद्देश्य बन जाता है और किशोर सीमा रक्षक की भूमिका की कल्पना करने लगते हैं—

'देशप्रेम का भाव बन चुका,
अब आदर्श हमारा।
सीमा पर टकराने वाला,
हरदम हमसे हारा।
जितने घाव लगे उतने हम,
और सँवरते हैं।
वीर सिपाही देश धर्म की,
रक्षा करते हैं।''

कविता में कवि के व्यक्तित्व की स्पष्ट झलक दिखाई देती है। व्यक्तित्व यदि दृढ़ होगा, तो ही हौसले बुलन्द होंगे और किसी कार्य को पूर्ण करने में तत्परता भी होगी। कार्य के पूर्ण होने में न तो संदेह होगा न कोई घबराहट होगी—

'दृढ़ प्रतिज्ञ हो बढ़ने वाले,
कभी नहीं घबराते।
जोश भरा है मन में इतना,
ज्यों सागर में पानी।
सारा जग यह माने कैसे,
बच्चे हिन्दुस्तानी।''

संसार में अनेक धर्म और धार्मिक सम्प्रदाय हैं। किन्तु धार्मिक आडम्बरों के कारण धर्म की श्रेष्ठता समाप्त हो रही हैं। ऐसी स्थिति में कवि का मानना है कि संसार का श्रेष्ठ धर्म मानवता है। मानव मात्र के प्रति प्रेम ही सच्ची ईश्वर भक्ति है और बच्चों में ही ईश्वर का वास है। अत: सच्ची ईश्वर भक्ति बच्चों की पूजा है—

''अपने साथ दूसरों के भी
सपनों को अपनाओ।
बच्चे ईश्वर का स्वरूप है,
यह समझो समझाओ। जीवन ...''

मानवता के धर्म की स्थापना के साथ आडम्बरों की अवहेलना कवि का मुख्य ध्येय है। धर्म क्या है ? इसे कविता के माध्यम से कवि ने अभिव्यक्ति दी है। सत्कर्म ही धर्म है। धर्म की यह परिभाषा आज के वैश्वीकरण और भौतिकवादी युग में सर्वश्रेष्ठ है। सत्कर्म सदा ही सच्चे और अच्छे होते हैं। ये शाश्वत, सार्वभौमिक और सार्वकालिक होते हैं। किसी भी देश में इनका पालन किया जा सकता है। जैसे जी माता—पीता की सेवा, रोगियों, पीडितों के प्रति सद्भाव 'सर्व भवन्तु सुखिन:' का सिद्धान्त आदि। जब तक व्यक्ति इन सब का पालन नहीं करेगा, तब तक वह सच्चा ईश्वर भक्त नहीं हो सकता—

'ढोंग और आडम्बर करना,
यह सत्कर्म नहीं है।
लाउडस्पीकर लगवा कर,
सबकी नींद उड़ाना।
धर्म समझते हो तुम इसको,
पर क्या धर्म यही है ?
यह सत्कर्म नहीं है।''[5]

कवि का किशोरों को यह सन्देश है कि खुली आँखों से दुनिया देखो, समझो। भले—बुरे की पहचान करना सीखो। यदि यह अन्तर्दृष्टि बालकों में उत्पन्न हो गयी तो उन्हें कोई भी दिशा भ्रमित नहीं कर सकती, उन्हें कुसंगति की ओर नहीं ले जा सकता। मेहनतकश, परोपकारी, निस्पृह, निरपेक्ष, एवं त्याग, समर्पण से जो व्यक्ति भरा है, वही सच्चा है, वही सत्पुरूष है। उसकी पहचान हो जाए तो किशोरों का जीवन सफल हो जाए—

''अन्तर समझें भले—बुरे का,
और इन्हें पहचानें।
कुछ देते हैं सब कुछ अपना,
नहीं कभी कुछ लेते
मानवता के सच्चे सेवक,
इनको अपना मानें !''[6]

विश्व में प्राय: सभी देशों की अपनी राष्ट्रभाषा

Scanned with OKEN Scanner

है। किन्तु बहुत ही कष्ट का विषय है कि हमारे भारत की अपनी राष्ट्रभाषा नहीं है। आज भी हिन्दी को हमारे राजनैतिक विद्वान वह अधिकार नहीं दे सके, जिसकी वह हकदार है। हिन्दी हमारी भाषा ही नहीं संस्कृति है, सभ्यता है, संस्कार है। हिन्दी हमारी अस्मिता है। बिना अस्मिता के हमारा जीवन सार्थक और उद्देश्य पूर्ण नहीं हो सकता। कवि के मन में इस बात की बहुत पीड़ा है कि देशवासी हिन्दी के प्रति अपनापन नहीं रख रहे है। देश की गौरवशाली परम्परा के निर्वहन हेतु कवि ने देश के नवयुवकों एवं किशोरों से हिन्दी अपनाने का आहवान किया है–

'बोस, तिलक सबकी यह इच्छा,
बने विश्व की भाषा।
उन्नति के शिखरों पर पहुँचे,
जन–जन की अभिलाषा।
विश्व भारती के यश गाए,
ऐसा कुछ कर जाएँ।।
भारत माता की अभिलाषा,
हिन्दी अपनाएँ।''

नयी पीढ़ी को संस्कार युक्त करना अत्यन्त आवश्यक है। आज के किशोर कल के युवा होंगे। ये देश के जिम्मेदार नागरिक बनेंगे। ऐसे में ज्वलन्त समस्याओं की ओर उनका ध्यान आकृष्ट करना कवि अपना कर्तव्य मानता है। आज समाज में सबसे बड़ी चुनौती है– पर्यावरण संरक्षण। पर्यावरण बचाने हेतु हमें हरवह कार्य करना है, जो समाज के हित में हो। समाज पर्यावरण प्रदूषण रहित होगा तो जीव–जगत, प्रकृति, जल, वायु सुरक्षित होंगे। मानव सभ्यता का विकास पर्यावरण पर आधारित है। अतः आज समय की माग है कि हम पर्यावरण की रक्षा करें। हमारे नौनिहाल इस कार्य को अच्छी तरह कर सकते हैं–

'हरियाली की महिमा समझो,
वृक्षों को पहचानो।
ये मानव के जीवन दाता,
इनको अपना मानो।
एक वृक्ष यदि कट जाए तो,
ग्यारह वृक्ष लगाओ।
पर्यावरण बचाओ–''

कवि का यह संग्रह मूलतः किशोरों के लिए है। बालकों की रुचि से कुछ अलग विषयों को इस संग्रह में उठाया गया है। साहस, सदाचार, पर्यावरण, भाषागत जागृति, देशप्रेम ये सब किशोरावस्था की भावनाएं है। इन सबके साथ एक और महत्वपूर्ण बात है– विपरीत लिंग के प्रति आकर्षण। किशोर युवा भी नहीं होता और उसका बचपन भी पूरा नहीं छूटता। ऐसे में संधिकाल की अवस्था होती है, जो बचपन से हट कर यौवन की देहलीज पर कदम रखता प्रतीत होती है। ऐसे में किशोर के मन की अवस्था का चित्रण करना भी कवि भूला नहीं है। किशोर सर्वाधिक जुड़ाव अपनी माँ के प्रति रखता है! अतः हर बात वह माँ को बताता है। विपरीत लिंग साथी के प्रति आकर्षण 'पम्मी अच्छी लगती' कविता में कुछ इसी प्रकार व्यक्त किया गया है। कवि के बाल साहित्य की यह विशेषता है कि एक ओर वह बालक को संग में जीता है, तो दूसरी ओर किशोर की कोमल संवेदनाओं को छूता प्रतीत होता है–

'मम्मी–मम्मी तुम्हें बताऊँ,
पम्मी अच्छी लगती।
उसके गोरे गाल गुलाबी,
मेरे मन को भाते।''

संग्रह की शीर्षक कविता है 'सूरज पाना है।' यही संग्रह का आधार भी है। प्रतीकात्मक शैली की यह रचना निःसंदेह मनोवैज्ञानिक प्रभाव डालने में सक्षम है। 'मैं नन्हा सा अंकुर सूरज पाना है' यह पंक्ति स्वयं में एक [illegible] समेटे हुए है। नन्हा अंकुर प्रतीक है बालक का। [illegible] मानव [illegible] और [illegible] है। [illegible] अंकुर [illegible] है। यह अंकुर [illegible] और [illegible] का। यह अंकुर प्रतीक है [illegible] का, यह अंकुर प्रतीक है निराशा [illegible] के सूर्य के समक्ष [illegible] साहित्य की आवश्यकता है।

कवि की मान्यता है कि मानव जन्म एक बार मिलता है। हमारे प्राचीन कवियों ने भी कहा है— 'नहीं ऐसो जन्म बार–बार' अथवा 'मानुष देह धरा पर आयो'। ऐसे मानव जीवन को सार्थक बनाना है। कुछ ऐसा करना है कि जग युगों–युगों तक याद रखे। जिस प्रकार अंकुर प्रस्फुटित, पुष्पित, पल्लवित होकर वृक्ष बनता है और बहुत से पक्षियों को आश्रय देता है, उसी प्रकार किशोरों का भी कवि ने आह्वान किया है बड़े बन कर दीन–दुखियों का सहारा बनो। स्वयं बढ़ो, दूसरों को भी सहारा दो। बौद्ध दर्शन, वेदान्त, भारतीय संस्कृति, ईसाई धर्म का प्रेम सिद्धांत, प्राचीन काल की लघुता की अवधारणा, समाजवादी विचारक लोहिया का लघु मानववाद, नई कविता की लघुता, आस्था, क्षणवाद सभी प्रवृत्तियाँ इस कविता में हैं। सामयिक पर्यावरण चेतना और विशुद्ध मानवतावादी भावना से ओतप्रोत यह कविता इस संग्रह की शोभा है।

निष्कर्षत: 'सूरज पाना है' काव्य संग्रह का शीर्षक स्वयं में प्रतीकात्मक है एवं आस्था, विश्वास, निश्चय तथा दृढ़ता लिये हुए है। यद्यपि कवि ने इसमें प्रयास किया है कि यह संग्रह किशोरों के लिए हो, किन्तु कवि बालमन से पूरी तरह विमुख नहीं हो पाया है। 'परियाँ आती थी', 'हम सब बच्चे', 'बच्चों इसको जानो', 'हम बच्चों के अद्भुत खेल' जैसी अनेक कविताएँ किशोरों के लिए तो नहीं है। हाँ, कुछ रचनाएँ किशोर काव्य का प्रतिनिधित्व अवश्य करती है।

संग्रह में माधुर्यपूर्ण शब्दावली, सुव्यवस्थित छंदयोजना, अनुप्रास की अधिकता, कहीं पुनरुक्ति, कहीं सरल प्रतीक, सुन्दर बिम्ब योजना 'पम्मी अच्छी लगती' और 'उसकी बात निराली' में स्पष्ट दिखाई देती है।

संदर्भ:—

१. परशुराम शुक्ल, सूरज पाना है, चेतक पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, २०१०, पृष्ठ:१३
२. सूरज पाना है, पृष्ठ—१८
३. सूरज पाना है, पृष्ठ—२०
४. सूरज पाना है, पृष्ठ—२२
५. सूरज पाना है, पृष्ठ—२८
६. सूरज पाना है, पृष्ठ—३२
७. सूरज पाना है, पृष्ठ—३३,३८
८. सूरज पाना है, पृष्ठ—३६
९. सूरज पाना है, पृष्ठ—४६
१०. सूरज पाना है, पृष्ठ—५०
११. सूरज पाना है, पृष्ठ—६५